'पत्र' संपादक के नाम

प्रश्न : हम आत्माएँ विकारी संसार में रहते हैं, यहाँ ऐसी आत्माएँ भी हैं जो गंदी, विकारी दृष्टि से देखती हैं तो क्या करना चाहिए, अपनी अवस्था कैसी बनानी चाहिए, क्या इसमें हमारा कोई दोष है? हम तो सादे रहते हैं, पवित्र संकल्प करते हैं, फिर भी ऐसा क्यों? थोड़ा प्रकाश डालिए।

• कुमारी रूपा

उत्तर : आपके प्रश्न के उत्तर में हम महाभारत की द्रौपदी को अपने सामने रख सकते हैं। उसका क्या कोई दोष था जो भरी सभा में उसे अपमानित किया गया। मनुस्मृति में लिखा है, 'यत्र पूज्यन्ते नार्यस्तु, रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। आप इसका उल्टा कर लीजिए, जहाँ नारी का अपमान होता है वहाँ असुर निवास करते हैं।

महाभारत काल आज पुन: हमारे सामने है। एक दुशासन या दुर्योधन की बात नहीं है, हर गली, मोहल्ले, चौराहे पर इनका विचरण है, मानो सर्वव्यापी हों। यदि किसी मोटे भय से प्रत्यक्ष चीरहरण न कर सकें तो मन ही मन या आँखों में ही ऐसा कुकर्म करने का प्रयास करते रहते हैं। यदि प्रत्यक्ष ऐसा कर्म हो जाए तो समाचार बन जाता है, नहीं तो नारी मानसिक पीड़ा भोगती रहती है।

इसका मूल कारण यह है कि समाज पुत्र की उत्पत्ति को जितना महत्त्व देता है, उसके संस्कार निर्माण का महत्त्व तुलनात्मक बहुत ही कम है। कन्या को फिर भी अंकुश में रखा जाता है। समाज के ऐसे दृष्टिकोण के साथ-साथ, रही हुई कसर मीडिया और शिक्षा प्रणाली पूरा कर देती है। जिधर देखो, सभी पापों की जड़, देह-अभिमान का ही बोलबाला है। देह अभिमान के कारण ही नर-नारी का भेद उत्पन्न होता है और नर चोले वाली आत्माएँ, नारी चोले वाली आत्माओं से दुर्व्यवहार कर बैठती हैं। यदि उन्हें यह ज्ञान हो जाए कि तत्वों के आवरण से ढकी आत्मा, उसी पिता परमात्मा की संतान है, जिसकी संतान मैं हूँ ,तो आत्मा-आत्मा भाई-भाई का भाव पैदा हो और आपस में शुद्ध स्नेह, सम्मान, सहयोग की भावना उत्पन्न हो।

कलियुग में 'विद्या विवादाय, धनम् मदाय और बलम् परपीडनाय' होता है। ऐसे में कोई भी नारी अपना सुरक्षा कवच स्वयं निर्मित करे। सबसे बड़ा सुरक्षा कवच है पतित पावन परमात्मा शिव की पावन स्मृति। **चलते-फिरते बुद्धि में यही रहे कि 'नारी चोले में विराजमान मैं एक शुद्ध आत्मा हूँ, मैं आत्मा परमपिता परमात्मा शिव की प्रिय संतान हूँ, मैं इस सृष्टि रंगमंच पर कुछ दिन मेहमान बनकर आई हूँ। मेरा तन फर्श पर है पर मन परमधाम में पिता परमात्मा के सान्निध्य में है। मैं उस परम रक्षक पिता परमात्मा से एक पल भी जुदा नहीं हो सकती। वे शिव हैं तो मैं शक्ति हूँ। उनके प्रकाश की किरणों का कवच सदा ही मेरे चारों ओर है। मैं उनके प्रेम की छत्रछाया में सदा ही सुरक्षित हूँ ...।'**

याद रहे, हमें दूसरों को नहीं बदलना, खुद को बदलना है। जैसे पंछी को शिकारी पकड़ने दौड़े तो वह शिकारी को दोषी नहीं ठहराता वरन् अपनी कला का प्रयोग कर दूर आसमान में उड़ जाता है। इसी प्रकार हमें भी अपने आत्मिक बल का प्रयोग करना है। माया या आसुरी शक्तियों के किसी भी भयानक रूप का सामना आंतरिक योगबल से करना है। आसुरी वृत्ति के वार के समय, मन को उड़ाकर परमधाम में ले जाओ। भगवान शिव अपनी गोद में समा लेंगे। नारी का सर्वोत्तम स्वरूप है 'माता'। माता कभी बच्चों का बुरा नहीं सोचती। अत: जगतमाता रूप को स्मृति में रख, देहभानवश पापकर्म करने वालों पर भी करुणा की किरणें बरसाते हुए भगवान शिव से यही दुआ करनी है कि वे इन्हें भी सद्विवेक प्रदान करें। ❖